शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

अटल बिहार वाजपेयी जी: पारिवारिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि

प्राप्तिः 25.01.2022
स्वीकृतः 15.03.2022

14

रविन्द्र कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान, विभाग

डॉ० हरीश कुमार
एसोसिऐट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग
एम०एम० (पी०जी०) कॉलेज,
मोदीनगर गाजियाबाद (उ०प्र०)
ईमेलः *kumarharish0430@gmail.com*

सारांश

किसी महान व्यक्ति के व्यक्तित्व का वर्णन करना बहुत मुश्किल है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जैसे योग्य, अनुभवी, महान, दूरदृष्टिवेत्ता, कर्त्तव्यपरायण व्यक्तित्व का शब्दों के माध्यम से वर्णन करना बहुत कठिन कार्य है। श्री वाजपेयी जी के दिल में राष्ट्रवाद की मशाल कॉलिज के दिनों से ही जलती रही है। देश के सर्वोच्च पद तक इनके उत्थान से हमारे कई युवाओं को प्रेरणा मिली है। इनकी वृक्तत्वकला का वर्षों से मैं कायल रहा हूं जो इनके सार्वजनिक जीवन में वृहत्तर मानवता की आकांक्षाओं को अभिव्यक्त करती रही है।''

मुख्य बिन्दु

राजनीति, स्वंयसेवक, अजातशत्रु।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसम्बर, 1924 को मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में हुआ। इनके पिता का नाम पं० कृष्ण बिहारी वाजपेयी व माता का नाम श्रीमती कृष्णा देवी था जो ६ ाार्मिक संस्कारों से सम्पन्न आदर्श गृहणी थी। इनके पिताजी ग्वालिर में स्कूल अध्यापक थे। वाजपेयी जी अपने पिता से बहुत प्रभावित रहे। इन्हें परिवार में सबसे छोटा भाई होने के कारण अपने तीनों भाईयों श्री अवध बिहारी वाजपेयी, श्री सदा बिहारी वाजपेयी और श्री प्रेम बिहारी वाजपेयी का स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन मिलने लगा। अपने माता–पिता से इन्हें बचपन में ही धार्मिक संस्कार मिलने लगे। वाजपेयी जी बचपन से बड़े होनहार, परिश्रमी तथा जिज्ञासा वृत्ति के रहे। इन्होंने बी०ए० की शिक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलिज (वर्तमान में लक्ष्मीबाई कॉलिज) से प्राप्त की। छात्र जीवन में वाजपेयी जी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद–विवाद प्रतियोगिता में भाग लेते रहे।

कानपुर के डी०ए०वी० कॉलिज से राजनीतिशास्त्र में एम०ए० की फिर एल०एल०बी० की पढ़ाई शुरू की लेकिन उसे बीच में ही विराम देकर संघ कार्यों में जुट गये। डॉ० श्यामा मुखर्जी और पं० दीन दयाल के निर्देशन में श्री वाजपेयी जी ने राजनीति का पाठ पढ़ा। वाजपेयी जी एक अच्छे

राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ एक अच्छे कवि भी हैं। इन्हें कवितायें लिखने का बहुत शौक रहा। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद विरासत में मिले। इनके पिता पं० कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण इनकी काव्य कला में और निखार आया। एक कवि का हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता। वाजपेयी जी की पहली कविता ताजमहल थी। ''मेरी इक्यावन कवितायें'' इनका प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। इसके अतिरिक्त वाजपेयी जी की ''कैदी कविराज की कुंडलियां'', ''न्यू डायमेन्शन ऑफ रशियन फॉरेन पॉलिसी'', ''मृत्यु और हत्या'', ''जनसंघ और मुसलमान'', अमर बलिदान, अमर आग है, एक वर्ष बीत गया, आओ मन की गांठे खोले, अपने ही मन से कुछ बोलें, भारतीयता का अहसास, सेक्यूलरवाद, राजनीति की रपटीली राहें, नये विश्व की ओर निर्णायक दौर इत्यादि कुछ प्रकाशित रचनायें हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी आजीवन अविवाहित रहे। इनकी दो दत्तक पुत्रियां है जिनके नाम नंदिता (नन्नी) और नमिता (गुन्नू) है। नंदिता यू०एस० में एक डाक्टर हैं और इन्होंने अशोक नंदा से विवाह किया जो सॉफ्टवेयर इंजीनियर हैं। नमिता दिल्ली में रहती हैं और इन्होंने रंजन भट्टाचार्य से विवाह किया। नमिता की एक पुत्री भी है। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी का अपने पिता से गहरा और आत्मिक जुड़ाव रहा। वाजपेयी जी अपने पिता के बहुत निकट रहे। इन्होंने इपने पिता की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से 1997 में ग्वालियर के अपने छोटे से घर में एक न्यास (ट्रस्ट) की स्थापना की। यहां बच्चों के लिए पुस्तकालय और वाचनालय शुरू किया गया जिससे बालकों को ज्ञान और जागरूकता की प्राप्ति हो।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता दृढ़ता रही है। वाजपेयी जी अपने बनाये हुए सिद्धान्तों तथा नियमों पर दृढ़तापूर्वक आगे बढ़े। इन्होंने अनेक धार्मिक ग्रन्थों, रामायण, महाभारत और भगवद्गीता आदि का गहन अध्ययन किया इसके अतिरिक्त वाजपेयी जी अनेक विद्वानों विचारकों तथा नेताओं से प्रभावित हुए। वाजपेयी जी उदारवादी, फिरोजशाह मेहता, दादाभाई नैरोजी, गोपाल कृष्ण गोखले तथा महात्मा गांधी से बहुत प्रभावित हुए, वाजपेयी जी ने महात्मा गांधी के बारे में कहा– ''महात्मा गांधी ने अपने सत्य तथा अहिंसा के सिद्धान्तों से (विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र) भारत को स्वाधीनता दिलायी।'' वाजपयी जी ने महात्मा गांधी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा– हमें गांधी जी द्वारा बताये हुए मार्ग पर चलना चाहिये। वाजपेयी जी पर बाल गंगाधर तिलक तथा सुभाष चन्द्रबोस की वीरता, देश भक्ति तथा बलिदान की भावना का गहरा प्रभाव पड़ा जिसके परिणामस्वरूप वाजपेयी जी ने अपने जीवन में राष्ट्रहित को सर्वोच्च माना तथा इसी लक्ष्य को लेकर दृष्तापूर्ण आगे बढ़े।

वाजपेयी जी श्री राममनोहर लोहिया के विचारों से बहुत प्रभावित रहे। श्री लोहिया जी के बारे में वाजपेयी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा ''हर मोर्चे पर संघर्ष लेने वाला, हर अन्याय तथा अभाव के विरूद्ध सबको लड़ने के लिए ललकारने वाला सेनानी हर परिस्थितियों को अपने अदम्य आत्मविश्वास और अपनी कर्त्तव्य शक्ति से अनुकूल मोड़ देने वाले थे।'' वाजपेयी जी ने श्रीराम मनोहर लोहिया के बारे में कहा कि उन्होंने मानव अस्तित्व को सदैव महत्व दिया। उन्होंने राजनीति

में जातिवाद, साम्प्रदायिकता परिवारवाद व व्यक्तिवाद का विरोध किया। जिससे लोकतंत्र मजबूत बने। संघर्ष तथा शानित में लोहिया जी ने सदैव राष्ट्र को नेतृत्व किया। वाजपेयी जी ने कहा कि 'राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित लोहिया जी का जीवन मेरे लिए मार्गदर्शन है।'

वाजपेयी जी पं० गोविन्दबल्लभ पंत के हिमालय के समान दृढ़ तथा समुद्र के समान गहन व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित रहे। उन्होंने कहा कि 'आगे आने वाली संतति इनके जीवन से सदैव प्रेरणा प्राप्त करती रहेंगी। वाजपेयी जी पं० दीनदयाल उपाध्याय के अधिक निकट रहे तथा उनसे प्रेरणा ली। वाजपेयी जी ने कहा– ''यदि जनसंघ को बनाने तथा बढ़ाने का श्रेय किसी को दिया जाता है तो वह उपाध्याय जी है।'' उपाध्याय जी देखने में सीधे–सादे मौलिक विचारक, संगठनकर्ता, दूरदर्शी नेता तथा सबको साथ लेकर चलने वाले तथा उनके सहयोगपूर्ण व्यवहार से वाजपेयी जी बहुत प्रभावित हुए।

अमेरिका के राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन द्वारा प्रजातंत्र की मजबूती में अपने प्रयासों द्वारा उन्होंने जो योगदान दिया उनकी इस सकारात्मक विचारधारा का वाजपेयी जी पर बहुत प्रभाव पड़ा। वाजपेयी जी ने उनके बारे में कहा अब्राहिम लिंकन ने लोकतंत्र की जो पहल अमेरिका में की, वह बहुत महत्वपूर्ण थी। जनतंत्र में हर मानव मात्र को अपनी सुरक्षा तथा शासन में भाग लेने का अधिकार प्राप्त है। वाजपेयी जी श्री राजगोपालाचारी तथा जय प्रकाश नारायण के विचारों से भी प्रभावित हुए। वाजपेयी जी ने इनके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा 'इन नेताओं ने अपने प्रयासों से भारतीय राजनीति में जो योगदान दिया वह सदैव स्मरणीय रहेगा।'

वाजपेयी जी के पंडित जवाहरलाल नेहरू के साथ काफी वैचारिक मतभेद रहे। लेकिन वाजपेयी जी पंडित नेहरू के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित रहे। वाजपेयी जी ने पं० नेहरू के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा 'पं० नेहरू शन्ति के पुजारी, किन्तु क्रान्ति के अग्रदूत थे, वे अहिंसा के उपासक थे, किन्तु स्वाधीनता और सम्मान की रक्षा के लिए हर हथियार से लड़ने के हिमायती थे। वे व्यक्तिगत स्वतंत्रता के समर्थक थे किन्तु आर्थिक समानता के लिए दृढ़ संकल्पित थे।'' वाजपेयी जी ने अपने राजनीतिक जीवन में श्रीमती इंदिरा गांधी से बहुत–सी भेंट हुई। वाजपेयी जी ने इन भेटों के सार–संक्षेप को व्यक्त करते हुए कहा इन भेंटों में कुछ नोंक–झोंक होती रहती थी। किन्तु इंदिरा गांधीजी के व्यक्तित्व, उनकी दृढ़ निर्णय लेने की क्षमता, कार्यकुशलता, अदम्य साहस, विचारशीलता तथा कार्य करने की निष्ठा से वाजपेयी जी बहुत प्रभावित हुए। वाजपेयी जी ने इंदिरा गांधीजी के बारे में अपने विचार व्यक्त करते हुए ''उन्हें भारतीय राजनीति की सबसे सशक्त महिला माना।''प्रारम्भ से ही राजनीति में रूचि होने के कारण श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने राजनीति को अपना कार्यक्षेत्र चुना। 1957 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने तीन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने का फैसला किया। एक लखनऊ, दूसरा मथुरा, तीसरा बलरामपुर। लखनऊ से लोकसभा चुनाव में श्री वाजपेयी को 57034 जबकि कांग्रेस के विजयी उम्मीदवार श्री पुतिन बिहारी बनर्जी को 69519 वोट मिले। मथुरा चुनाव में तो इनकी जमानत भी जब्त हो गयी थी। वाजपेयी जी ने बलरामपुर (जिला गोण्डा, उत्तर प्रदेश) से जनसंघ के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा। उन्हें 118380 मत मिले जबकि कांग्रेस के श्री हैदर हुसैन लगभग 10000 मतों से हारे। श्री वाजपेयी विजयी होकर लोकसभा में पहुंचे।

वाजपेयी जी का संसदीय जीवन 1957 से प्रारम्भ हुआ। संसदीय सदस्य चुने जाने के बाद वाजपेयी जी ने लोकसभा व राज्यसभा दोनों सदनों में काम किया। वाजपेयी जी ने अपनी उपस्थिति में संसद की मान–मर्यादा का विशेष ध्यान रखा। तीसरे लोकसभा चुनाव (बलरामपुर) में श्री वाजपेयी की हार हुई। तीसरे लोकसभा चुनाव में वे 2000 वोटों से हार गये। उन्हें 100208 मत मिले जबकि कांग्रेसी उम्मीदवार को 102260 वोट मिले। वाजपेयी जी ने भारतीय राजनीति को संसद तथा संसद के बाहर भी प्रभावित करते रहे। इनका सार्वजनिक कथन समाचार बन जाता। इनके भाषणों में काव्यात्मकता, विद्वता और सौम्यता का संगम रहा। इनकी जिव्हा पर सरस्वती का वास विद्यमान रहा। इनकी आलोचना के प्रहारों ने कभी भी किस को घायल नहीं किया। राजनीति जैसे कठोर प्रतिस्पर्धी क्षेत्र में रहते हुए भी वह अजातशत्रु रहें। वाजपेयी जी की अप्रतिम वक्तृत्व कला, प्रत्युत्पन्नमति और व्यंग्य तथा चुटकियां श्रोताओं को मंत्र मंत्र मुग्ध कर देती। इनकी गम्भीरता, धैर्य, दूरदृष्टि और तथ्य आंकड़े से परिपुष्ट तर्कशैली से मन अभिभूत हो जाता है। वाजपेयी जी ने जीवन के लगभग सभी पहलुओं को अधिकार पूर्वक उद्धधारित किया। इनके चिंतन की परिधि में अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं, भारत की विदेश नीति, कृषि रक्षा, समाज सुधार, उद्योग शिक्षा, पंचवर्षीय योजनायें, केन्द्र राज्य सम्बन्ध, रेलवे, वित्त बैकिंग, अराजकता, दलबदल और भ्रष्टाचार की समस्या सभी समाहित रहे।

आज के समय में राजनेता सिर्फ आज की बात सोचते है। जबकि राजनीतिज्ञ विषारद पीढ़ियों का विचार करते हैं। श्री अटल बिहारी वाजपेयी विषारदों की श्रेणी में आते हैं। यह तथ्य इनके भाषणों में असंदिग्ध रूप से स्पष्ट हो जाता है। वाजपेयी जी के भाषणों को पढ़कर मन में यह विचार उठे बिना नहीं रह पाता कि काश! संकट–पूर्ण राजीतिक–आर्थिक दुराव्यवस्था में न उलझी होती। वाजपेयी जी बहुत कम बोलने वालों में से है, परन्तु इनके द्वारा बोला गया हर शब्द पूर्ण रूप से हृदय को स्पर्श करता है। वाजपेयी जी के लोकसभा में प्रवेश के साथ इनके प्रभावशाली व्यक्तित्व का परिचय सदन में स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा था। इन्होंने अपने विचारों को सदन में भाषण के रूप में रखा। वाजपेयी जी पहली बार 1962 में तथा दूसरी बार 1986 में राज्य सभा के सदस्य निर्वाचित हुए।

अटल बिहारी वाजपेयी जी के अनेक निर्वाचन क्षेत्रों में उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ भी एक है। वाजपेयी जी लखनऊ से पांच बार (1991, 1996, 1998, 1999, 2004) लोकसभा के लिए चुने गए और दो बार (1957, 1962) में हारे भी है। पिछले कई दशकों से वाजपेयी जी ने संसद में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। वाजपेयी जी 1966–1967 के दौरान सरकारी आश्वासन सम्बन्धी समिति, 1969–1970 और 1991–1992 के दौरान लोक लेखा समिति तथा 1990–1991 के दौरान याचिका समिति के अध्यक्ष रहें।

संसदीय सद्भावना मिशन को 1983 में यूरोपीय संसद में संसदीय शिष्ट मंडल के, कनाडा (1996), जाबिया (1980), आइल ऑफ मैन (1984) में आयोजित राष्ट्रमंडल संसदीय शिष्टमंडल के जापान (1974), श्रीलंका (1975), स्विजरलैंड (1984) में आयोजित अंतर संसदीय यूनियन सम्मेलन में भारतीय शिष्टमंडल के तथा 1988, 1989, 1990, 1991, 1992, 1993, 1994 एवं 1996 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में भारतीय शिष्टमंडल के सदस्य रहें। वाजपेयी जी अनेक अवसरों पर राष्ट्रीय एकता परिषद

के सदस्य भी रह चुके है। वाजपेयी जी 1965–1970 के दौरान अखिल भारतीय स्टेशन मास्टरस् एण्ड असिस्टेंट स्टेशन मास्टरस् एसोशिएसन के तथा 1968–1984 के दौरान पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मारक समिति के अध्यक्ष रहे।

पं० दीनदयाल उपाध्याय की रहस्यमय परिस्थिति में मृत्यु हो जाने पर वाजपेयी जी को दीनदयाल उपाध्याय जी की जगह पार्टी अध्यक्ष बनाया गया। उनके श्रद्धांजलि भाषण में वाजपेयी जी ने कहा ''दीन दयाल उपाध्याय जी ने ज्योति जलाई हम उसको ज्वाला कर देगें।'' इस उद्‌बोधन से उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं को स्फूर्ति दी। वाजपेयी जी भारतीय जनसंध की स्थापना करने वालों में से एक है और 1968 से 1973 तक जनसंघ के अध्यक्ष भी रह चुके है। 1957 से 1977 तक (जनता पार्टी की स्थापना तक) जनसंघ के संसदीय नेता रहें। वाजपेयी जी मोरार जी देसाई की सरकार में विदेश मंत्री रहें।

1. 1971 में भारत–पाक युद्ध के दौरान वाजपेयी जी ने सारे देश का दौरा किया और जगह–जगह अपने भाषणों से जनता का मनोबल बढ़ाने में सहायता की।
2. श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी भाग बढ़–चढ़कर लिया। 1942 में वाजपेयी जी को ब्रिटिश हुक्मरानों ने जेल भेजा।
3. श्रीमती इंदिरा गांधी के शासन काल में आपातकाल के पूरे दौर में 1975 से 1977 तक वाजपेयी जी जेल में रहे।
4. वाजपेयी जी ने 1980 में जनता पार्टी से असन्तुष्ट होकर इस पार्टी को छोड़ दिया।

वाजपेयी जी ने भारतीय जनता पार्टी की स्थापना में पूर्ण सहायता की। 6 अप्रैल, 1980 में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) बनी। वाजपेयी जी इस पार्टी के अध्यक्ष बने। इनको इस पार्टी का पूर्ण उत्तरदायित्व सौंपा गया। लोकतंत्र के सजग प्रहरी वाजपेयी जी ने प्रधानमंत्री के रूप में देश की बागडोर संभाली। राष्ट्र की प्रति वाजपेयी जी की समर्पित सेवाओं के लिए राष्ट्रपति ने 1992 में पद्‌म विभूषण से विभूषित किया। 1993 में कानपुर विश्वविद्यालय ने फिलॉसफी में डॉक्टरेट की मानद उपाधि इनको प्रदान की गई। वाजपेयी जी को 1994 में ''लोकमान्य तिलक'' पुरस्कार दिया गया। 1994 में वाजपेयी जी को ''सर्वश्रेष्ठ सांसद'' गोविंद बल्लभ पंत पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उपराष्ट्रपति श्री के०आर० नारायण की उपस्थिति में प्रधानमंत्री श्री नरसिंह राव द्वारा ''सर्वश्रेष्ठ सांसद'' का पुरस्कार श्री वाजपेयी जी को प्रदान किया गया।

जब इन्हें ''सर्वश्रेष्ठ सांसद'' का पुरस्कार मिला तब पंडित गोविन्दबल्लभ पंत स्मारक समिति के संयोजन ने कहा ''अटल बिहारी वाजपेयी जी पिछले चार दशकों से सांसद थे। इस अवधि में इन्होंने अपनी भाषा, अभिव्यक्ति, अनुशासन और सम्मानित हार के कारण वाजपेयी जी ने अपना एक स्थान बनाया हैं। सांसद के रूप में इनकी भूमिका का सब लोहा मानते हैं। विभिन्न अवसरों पर वाजपेयी जी ने संकुचित दृष्टिकोण से ऊपर उठकर देशहित को सबसे ऊपर रखने की अपनी क्षमता को प्रदर्शित किया।'' श्रीपंत समिति के संयोजक ने इस अवसर पर कहा 'अनेक वर्षों तक वाजपेयी जी के साथ रहा हूं। इसलिए इस अवसर पर इन्हें हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई देने में किसी औपचारिकता को नहीं निभा रहा हूं।

वाजपेयी जी को ''सर्वश्रेष्ठ सांसद'' पुरस्कार दिये जाने पर श्री के०आर० नारायण (भारत के पूर्व उपराष्ट्रपति) ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा ''मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष का सर्वश्रेष्ठ सांसद पुस्रकार के लिए श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को चुना गया है। वाजपेयी जी पंडित गोविन्द बल्लभ पंत सरीखे ही संसदविद् थे।'' श्री शिवराज पाटिल ने वाजपेयी जी को 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' पुरस्कार दिये जाने के संबंध में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा– ''वाजपेयी जी की भाषा मुहावरेदार, मीठी, काव्यमय, प्रेरणा देनी वाली और असान होती है। कभी–कभी इनकी भाषा में व्यंग्य का हल्का पुट भी होता है। शब्दों में गतिशीलता होती है। जब वाजपेयी जी बोलते–बोलते शब्दों के बीच विराम देते है तो उस विराम का भी अपना एक मतलब होता है। उसमें भी एक तर्क और माधुर्य होता है। श्रोता वाजपेयी जी को सुनना चाहते है और उन्हें सुनकर आनन्दित होते है। श्री वाजपेयी जी के शब्दों में गहरा विचार होता है। कम से कम शब्दों में अपनी बात कहने में तो वाजपेयी जी को महारत हासिल थी। उनके विचार भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच की एक कड़ी के रूप में काम करते हें। आधुनिक विचारों को ग्रहण करने को वे हमेशा तैयार रहें। उन्होंने मूल विचारों को पूर्ण सम्मान देने पर बल दिया। वाजपेयी जी का दर्शन व्यापक है और इसमें इनकी गम्भीरता अभिव्यक्त होती है। वाजपेयी जी के गुणों व योग्यताओं, विचारों और दर्शन से संसद की गरिमा शक्ति और उपयोगिता को बढ़ावा मिलता हैं। हमें विश्वास हैं कि भविष्य में भी वे ऐसा ही करते रहेंगे। भारत रत्न पंडित गोविन्द बल्लभ पंत 'सर्वश्रेष्ठ सांसद' पुरस्कार सदन के नेता द्वारा विपक्ष के नेता को दिया जाता रहा हैं, वह भी आप सबकी उपस्थित में विपक्ष के नेता वाजपेयी जी आज यह पुरस्कार ग्रहण कर रहे है। यह हमारी संसदीय प्रणाली की परिपक्वता का प्रतीक हैं। इस अवसर पर भगवान से हमारी प्रार्थना हैं कि श्री वाजपेयी जी स्वस्थ और दीर्घ आयु हो, जिससे वे देश, संसद और विश्व की सेवा करते रहें।''

विपक्ष में होने के बावजूद इन्होंने कई बार दिखाया है कि राष्ट्रीय उपलब्धियों के समय में वे बड़े उदार हृदय और भावनाओं से प्रभावित होने वाले व्यक्ति है। इनकी अपनी गहरी राजनीतिक मान्यतायें, लेकिन इनका दृष्टिकोण बड़ा ही संसदीय रहा। वाजपेयी जी ने हमेशा लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत काम किया। ये हमेशा दूसरे के विचारों को सुनने को तैयार रहते। इनका इस बात में पूर्ण विश्वास रहा कि सभी विवादों को विचार–विमर्श द्वारा हल किया जाएं। वाजपेयी जी संसद में हो या संसद के बाहर इनका दृष्टिकोण और आचरण हमेशा संसदीय प्रक्रिया की सर्वोच्च परम्पराओं पर आधारित रहा और सभी इस कारण इनका बहुत सम्मान करते। सभी युवा और भावी सांसद वाजपेयी जी से यह सीख सकते हैं कि किस प्रकार बहस की जाएं, लोकतांत्रिक तरीकों से पारस्परिक मतभेदों को किस तरह सीमित किया जाएं। वाजपेयी जी आगे आने वाले समय में भी संसद और देश को मार्गदर्शन देते रहेंगे और देश सम्मान बढ़ाते रहेंगे जैसे कि अब तक अपने कार्यों द्वारा करते रहे है।''

1994 में भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री पी०वी० नरसिंह राव के विशेष आग्रह पर वाजपेयी जी ने जिनेवा में मानवाधिकारों के सम्मेलन में न केवल भारत का प्रतिनिधित्व किया अपितु प्रतिपक्ष के नेता द्वारा सरकार का पक्ष प्रस्तुत किया जाने की यह घटना अपने आप में वहां उपस्थित सभी राष्ट्र

प्रमुखों के लिए आश्चर्य और भारत के लोकतंत्र के प्रति निष्ठा और विश्वास का अवसर बनी। 1995 में संयुक्त राष्ट्र संघ की 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए आयोजित विशेष सत्र में वाजपेयी जी ने देश के दल का नेतृत्व किया।

14वीं लोकसभा के सदस्य के रूप में श्री अटलबिहारी वाजपेयी 10 लोकसभाओं का अनुभव रखने वाले व्यक्ति रहें। 25 दिसम्बर, 2000 को प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'अंत्योदय अन्न योजना' की घोषणा के तहत 1 करोड़ अत्यन्त निर्धन परिवारों को प्रत्येक माह 25 किग्रा० खाद्यान्न मुहैया कराये जाने तथा इसके साथ श्री वाजपेयी ने प्रधानमंत्री 'ग्राम सड़क योजना' की घोषणा की। इन योजनाओं में तीन वर्षों में एक हजार से ज्यादा जनसंख्या वाले गांवों को हर मौसम के लिए अनुकूल अच्छी सड़कों को जोड़ा जाने तथा इसके साथ 500 से ज्यादा जनसंख्या वाले गांवों को वर्ष 2007 तक मुख्य सड़कों से जोड़ने की घोषणा की। राजग सरकार ने देश की आम जनता की बुनियादी जरूरतों के वास्ते वस्तुओं को सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराने के लिए 21 जुलाई, 2000 से 'सर्वप्रिय' एव राष्ट्रीय योजना शुरू की?

श्री अटल बिहारी वाजपेयी स्वास्थ्य समस्या के कारण राजनीति से दूर रहे। श्वसन क्रिया में परेशानी होने के कारण इन्हें कई बार 'एम्स' अस्पताल में भर्ती कराया गया। वाजपेयी जी ने राजनीति से संन्यास ले लिया था और 16 अगस्त, 2018 को 93 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गयी। एक व्यक्ति के रूप में श्री वाजपेयी बहुत संवेदनशील रहे। सहायता और सहयोग चाहने वालों को कभी खाली हाथ नहीं लौटाया। वाजपेयी जी ने राजनीति में नैतिक मूल्यों पर बल दिया तथा इन्होंने साधनों की पवित्रता को महत्वपूर्ण माना। वाजपेयी जी ने अपने राजनीतिक जीवन में स्पष्ट विचारधारा को अपनाया। भारतीय राजनीति में पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा इंदिरा गांधी जी के बाद श्री वाजपेयी अन्य नेताओं की अपेक्षा राजनीति में लम्बे समय तक विद्यमान रहें। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के संवेदनशील व्यक्तित्व से प्रभावित होकर अनेक व्यक्तियों ने अपने शब्दों के माध्यम से श्री वाजपेयी जी के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त किया।

समता पार्टी के अध्यक्ष रहे श्री जार्ज फर्नाडिस ने अपने विचारों को व्यक्त करते हुए कहा 'श्री अटल जी की गणना उन अग्रणी सांसदों में की जाती है जिनका किसी मुद्दे को प्रस्तुत करने, भाषा का सटीक सही प्रयोग तथा मुद्दे के प्रति ईमानदारी के रूप में एक अलग ही अंदाज है उनकी वाकपटृता एवं शैली अद्वितीय होने के कारण उन्हें सुनने का अलग ही आनंद है।

श्री नाना जी देशमुख ने श्री अटल बिहारी वापेयी के संदर्भ में कहा कि ''मैं और अटल जी लगभग 20 वर्षों से अलग–अलग क्षेत्रों में कार्यरत रहने के बावजूद हमेशा हम लोग एक दूसरे के काफी करीब रहें हैं, दोनों को ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संस्कार मिलें इसलिए वास्तविक दूरी कही नहीं रही। फर्क केवल इतना है कि 70 के दशक में मैंने राजनीति छोड़ दी मगर अटल जी राजनीति में सक्रिय रहें। उन्होंने भारतीय राजनीति में अपने आचरण, पराक्रम, उद्देश्य परकता और ओजस्वी वाणी से एक विशिष्ट स्थान बनाया।

वाजपेयी का यही निश्चल, निःस्वार्थ देश प्रेम कविता में बहुत गहराई के साथ अभिव्यक्त हुआ है। वाजपेयी जानते है कि भावात्मक एकता के लिए राष्ट्रप्रेम ऐसा आवश्यक तत्व है जिसके

बिना सारे आदर्श व्यक्ति का सम्पूर्ण व्यक्तितव अधूरा रह जाता है। परिणामस्वरूप उनकी कविता में राष्ट्रीयता के स्वर गूंजते रहे हैं। वाजपेयी जी बाल्यकाल से ही राष्ट्रगीत गाते रहे, जिन्हें पुष्पित पल्लवित एवं सुगंधित होने के अवसर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में मिला। राष्ट्र प्रेमियों के बीच रहते हुए शब्द की गरिमा को समझने का सुयोग मिला। उन्होंने अनुभव किया, राष्ट्रीयता का पथ अनुपम अजेय है। जहाँ जीत है, अमरत्व है। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। यही सर्वस्व के सर्मपण की भावना मनुष्य को अमरत्व की ऊँचाई तक ले जाती है। इसीलिए अन्य लोगों को भी इस पुनीत तथ्य पर आने, आगे बढ़ने और सर्वस्व की आहूति देने को उत्प्रेरित करना मुख्य लक्ष्य है जिसकी ओर कोटि चरण बढ़ रहे है।

संदर्भ

1. घटाटे, ना०मा०. (1999). मेरी संसदीय यात्रा. प्रभात प्रकाशन. 19, आसिफ अली रोडः नई दिल्ली–110002. संस्करण प्रथम–1999. द्वितीय–2000. पृष्ठ **519–523.**
2. (2009). अमर उजाला. गाजियाबाद. 16 मार्च।
3. घटाटे, ना०मा०. (1999). मेरी संसदीय यात्रा (आत्मकथा). प्रभात प्रकाशन. 4/19, आसिफ अली रोडः नई दिल्ली. संस्करण प्रथम– 1999, 2000.
4. घटाटे, ना०मा०. (1999). मेरी संसदीय यात्रा (आर्थिक स्थिति), श्री अटल बिहारी वाजपेयी–एक परिचय. प्रभात प्रकाशन, 4/19, आसिफ अली रोडः नई दिल्ली. संस्करण प्रथम– 1999, द्वितीय, 2000. (आर्थिक स्थिति)।
5. घटाटे, ना०मा०. (2009). मेरी संसदीय यात्रा (विदेश नीति), श्री अटल बिहारी वाजपेयी– एक परिचय. प्रभात प्रकाशन. 4/19, आसिफ अली रोडः नई दिल्ली।
6. घटाटे, ना०मा०. गठबन्ध की राजनीति, श्री अटल बिहारी वाजपेयी– एक परिचय. प्रभात प्रकाशनः 4/19, आसिफ अली रोड, नई दिल्ली–110002.
7. (2009). दैनिक जागरण. गाजियाबाद. जनवरी।
8. विद्रोही, जगदीश., सक्सेना, बलवीर. (1998). प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी. साहित्य प्रकाशनः 3011, वल्लीमारन, दिल्ली, 110006. पृष्ठ **186–189.**
9. जोगी, सुनील. (2000). राजनीति के शिखर कवि अटल बिहारी वाजपेयी. लक्ष्मीनारायण शर्मा. सत्साहित्य भण्डारः 57 वी, पॉकेट ए, अशोक विहार. पृष्ठ **2.** दिल्ली–110052. पृष्ठ **209–211.**